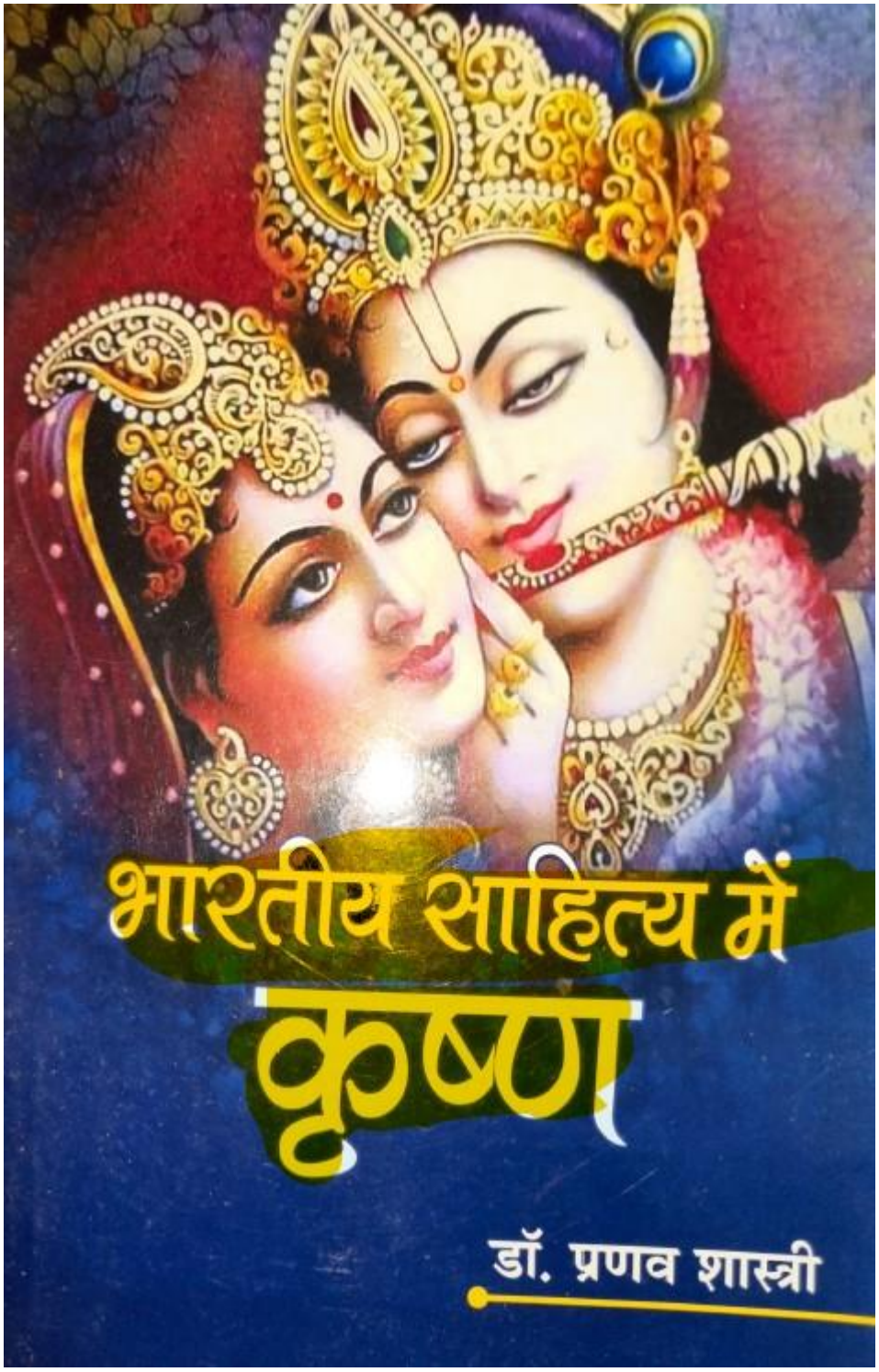
भारतीय साहित्य में
कृष्ण
डॉ. प्रणव शास्त्री

ISBN : 978-93-81488-57-7

प्रकाशक : देशभारती प्रकाशन
सी-585, गली नं. 7, अशोक नगर,
निकट रेलवे फाटक, शाहदरा,
दिल्ली-110093
दूरभाष : 9870425842

© : लेखक

प्रथम संस्करण : 2019

मूल्य : ₹ 750/-

आवरण : अमित कुमार

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, दिल्ली-110093

Bhartiya Sahitya Mein Krishna

By Dr. Pranav Shastri

रास लीला का सामाजिक पक्ष

डॉ. पूर्णिमा आर
सहायक आचार्य, शोध निर्देशिका और विभागाध्यक्ष,
एस एस वी कालेज, वलयंचिरंङरा, पेरुंबावूर, केरल।

रसात्मक आनंद की दिव्य क्रीड़ा जो अहंभाव को पूरी सृष्टि से एकात्म कर, विश्व प्रेम से भर देने की प्रक्रिया को रास कहा जाता है। इसका आरंभ श्रीमदभागवत पुराण से माना जाता है जहां रास का चित्रण दशम स्कंध के 29 वें अध्याय से लेकर 33 तक के पांच अध्यायों में मिलता है जो रास पंचाध्याई के नाम से प्रसिद्ध है। इसके परवर्ती पुराणों जैसे हरिवंशादि में भी इसका उल्लेख है। संस्कृत काव्यों में इसका चित्रण भरपूर मात्रा में हुआ है। हिंदी साहित्य में सूर प्रभृति कवियों ने रास लीला को अमरत्व प्रदान किया या यूँ कह सकते हैं कि साहित्य के द्वारा ही रास लीला अमर हुई।

रास का संबंध रस से माना जाता है। शिव कुमार मिश्र का कहना कि "बड़ी मानवीय, बड़ी सहज, बड़ी निष्कलुष और बडी उदात्त अनुभूति से मंडित सूर का यह प्रेम–लोक है। यहाँ मलीनता का, कुण्ठा का, स्वार्थ लिप्सा का लेशमात्र भी नहीं है ,यहां खुले ह्रदय और खुले मन से किया अदभुत प्रेम व्यापार है जो रूखे मनों को सरस करता है, शुष्क ह्रदय सींचता है, जड़ से जड़ व्यक्ति को भी स्पंदित करते हुए उसे जीवन के उन्मुख करता है।1 रास पारिस्थितिकी का पहला पाठ पढ़ाता है। यह है, गोपियाँ है, हरी भरी प्रकृति है, चांद है, सितारे हैं। चांदनी रात में प्रकृति के सुहावने वातावरण में , प्रेम की गंगा बहती है जो जीवन डूब जाने को मानव जीवन के ताप को महसूस करने को, ज़अपने के स्पंदनों से भर देने को 2 प्रेरित करता है। रास मानव प्रकृति के तत्वों को दर्शाता है जिस पर चलकर हमारे अध्यात्मिक मह जीवात्मा और परमात्मा की एकता को सूचित करने का प्रयास

विद्वानों के अनुसार रास दो प्रकार का है – शारदीय रास रास। श्रीमदभागवत में शारदीय रास का चित्रण है तो गीतगो रास का। रास पंचाध्याई के अनुसार रास के दो प्रकार है –नि महा रास। नित्य रास लीला नित्य होती है और महारास अवसर पर। भक्तिकाल साहित्य में रास के इन दोनों प्रका